लोकमत समाचार
नागपुर, रविवार, 21 अगस्त 2016

साइबर स्पेस में सुरक्षा सबसे पहली जरूरत

साइबर कवच

वरुण कपूर
अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक
एवं साइबर सिक्योरिटी विशेषज्ञ

कुछ साल पहले तक हम सब एक ही दुनिया में रहते थे, जिसे हम 'वास्तविक दुनिया' कह सकते हैं. एक ऐसी दुनिया जिसमें हम एक दूसरे को देख सकते हैं, महसूस कर सकते हैं, छू सकते हैं, बातचीत कर सकते हैं और एक दूसरे को समझ भी सकते हैं. हम यह जानने की क्षमता रखते हैं कि जिस शख्स से हम बातचीत कर रहे हैं वह कैसा है. हम गलत हो सकते हैं लेकिन कम से कम हमें आंकने का एक अवसर तो मिलता है - ऐसा इसलिए क्योंकि हम एक-दूसरे के सामने शारीरिक रूप से उपस्थित होते हैं और बातचीत करते हैं. हमें यह भी जानने का अवसर मिलता है कि सामने वाले व्यक्ति के दिमाग में क्या चल रहा है - वह क्या सोच रहा है - चाहे वह पॉजिटिव सोच रखता हो या निगेटिव. हालांकि जीवन का एक और महत्वपूर्ण सिद्धांत है कि "सारे विकास, प्रगति और खुशी का आधार सुरक्षा है." यदि किसी को सुरक्षा की चिंता है तो उसके ऊपर सबसे बड़ी जिम्मेदारी अपनी सुरक्षा की होती है. इसके बाद परिवार, समुदाय, पुलिस या सरकार आते हैं. इसीलिए हम सब सुरक्षित रहने के लिए हरसंभव प्रयत्न करते हैं- जब हम बाहर जाते हैं तो घर में ताला लगाकर जाते हैं; सड़क पार करते हैं तो पहले बाएं, दाएं देखते हैं उसके बाद सड़क पार करते हैं; वाहन चलाते हैं तो पहले ड्राइविंग लाइसेंस पाने के नियम जानते हैं और गाड़ी चलाना सीखते हैं.

वर्तमान समय में हम सिर्फ एक ही दुनिया में नहीं बल्कि दो दुनियाओं में रहते हैं. इस दूसरी दुनिया को 'आभासी दुनिया' (वर्चुअल वर्ल्ड) कहा जाता है. इस दुनिया में कल्पना की उड़ान की कोई सीमा नहीं है - युवा और बच्चे भी अपने अभिभावकों को दिए वाले समय की तुलना में बहुत ज्यादा समय इस काल्पनिक दुनिया को देते हैं. चूंकि आभासी दुनिया हमारे सामने ठोस रूप में उपस्थित नहीं होती है, लोग ऐसा विश्वास करना और बर्ताव करना शुरू कर देते हैं कि आभासी दुनिया का अस्तित्व ही नहीं है और इसका स्थान सिर्फ कल्पना में है. वे उन नियम-कायदों को जानने की ओर ध्यान नहीं देते जिससे यह दुनिया संचालित होती है और न ही वे अपने सुरक्षा उपायों की ओर ध्यान देते हैं. असल में उन्हें लगता है कि आभासी दुनिया उनके सामने ठोस रूप में मौजूद नहीं है इसलिए वह उन्हें नुकसान नहीं पहुंचा सकती और वे महत्वपूर्ण सुरक्षा उपायों की उपेक्षा करते हुए जो चाहें कर सकते हैं. यह एक आत्मघाती और लापरवाह नजरिया है जिसकी वजह से साइबर क्राइम और तकनीक से संचालित अन्य अपराधों में बेशुमार वृद्धि हो रही है.

समय आ गया है कि नागरिक साइबर स्पेस में सुरक्षित व्यवहार के महत्व को समझें और उस पर ध्यान दें. यह अपनी और अपने प्रियजनों की सुरक्षा की पहली शर्त है. यह कथित आभासी दुनिया भले ही भौतिक रूप में मौजूद नहीं होती, लेकिन यह वास्तविक दुनिया की तुलना में अधिक भयंकर है और लापरवाही बरतने पर यह वास्तविक दुनिया में उसी तरह की बरती जाने वाली लापरवाही की तुलना में अत्यधिक नुकसान पहुंचा सकती है. ■■